कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MHD-23

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.हिन्दी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.एच.डी. -23 : मध्यकालीन कविता-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) लगु जैस इह अहि बुतकारी। चन्दन जैफर मिरै सँवारी॥
सरग पवान लाग जनु आयी। चाहत बैंसौं जाइ उड़ायी॥
बाँसपोर हुत जनु घर काँढ़ी। अछरि जइस देखि मैं ठाढ़ी॥
कोंइ पुहुप अस अंग गँधाई। रितु बसन्त चहुँ दिसि फिर आई॥
अंग बास नौखण्ड गँधाने। बास केतकी भँवर लुभाने॥
उपेन्दर गोयन्द चँदरावल, बरभाँ बिसुन मुरारि॥
गुन गँधरव रिखि देवता, रूप विमोह नारि॥

(ख) एकै माटी के सभ भाँडे, सभ का एकौ सिरजनहारा।
रैदास व्यापै एकौ घट भीतर, सम को एकै घड़ै कुम्हारा॥

(ग) मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु।
कैसै गहत दोहनी घुटुवनि, कैसे बछरा थन लै लावहु।
कैसैं लै नोई पग बाँधत, कैसैं लै गैया अटकावहु।
कैसे धार दूध की बाजति, सोइ सोइ विधि तुम मोहिं बतावहु।
निपट भई अब साँझ कन्हैया, गैयनि पै कहुँ चोट लगावहु।
सूर स्याम सौं कहत ग्वाल सब, धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥

(घ) छीर जो चाहत चीर गहैं ए जू लेहु न केतक छीर अचैहौ।
चखन के मिस माखन माँगत खाहु न माखन केतिक खैहौ।
जनत हौं जिय की रसखानि सु काहे को एतिक बात बढ़ैहौ।
गोरस के मिस जो रस चाहत सो रस कान्ह जू नेकु न पैहौ॥

2. मध्ययुगीनता की अवधारणा का विस्तृत विवेचन कीजिए। 10

3. सगुण काव्यधारा के **पाँच** विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों का परिचय दीजिए। 10

4. रविदास की सामाजिक चेतना की चर्चा कीजिए। 10

5. रसखान की कविता में अभिव्यक्त 'प्रेम' का सोदाहरण परिचय दीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) 'चेदायन' में प्रेम का स्वरूप

(ख) परमानंद दास का साहित्यिक परिचय

(ग) सहज-शून्य की अवधारणा

(घ) सूरदास की नई उद्‌भावनाएं